ISSN 2347-5390

चौराहा

अंक-7, जुलाई-दिसम्बर, 2016

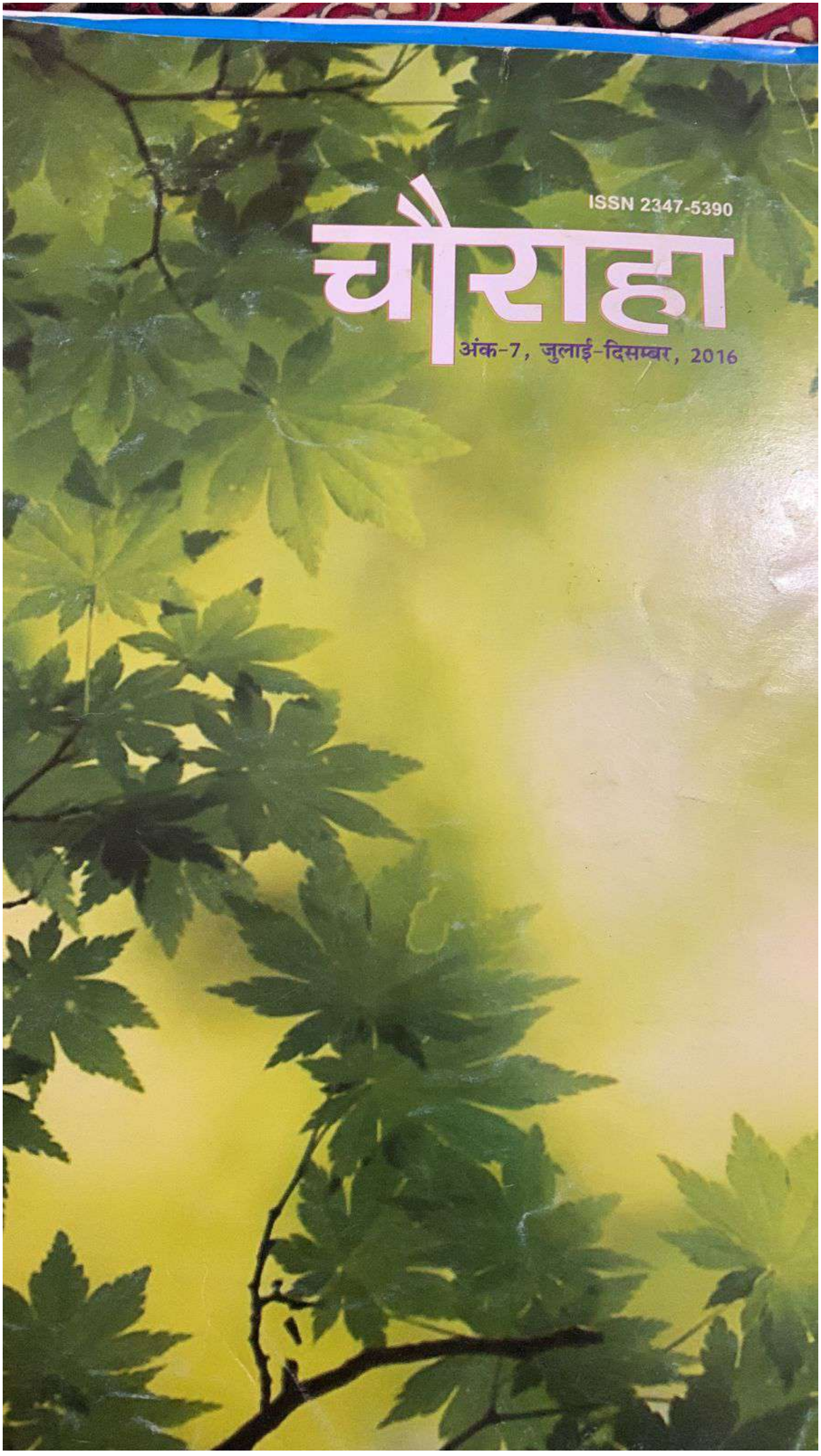

अज्ञातपुर की कहानियाँ

–डॉ. लोकेश कुमार गुप्ता

जमाने की तड़प को रचना में उपस्थित करना और उपस्थित विश्व में जिन्दगी के रंगों को तलाशना सृजन, कवित्व अथवा संवेदना की उर्वर भूमि है। कविता वर्तमान समाज में दुश्कर तो नहीं, लेकिन आज के दौर में जिन्दगी के ठहराव को रुककर परखने, पढ़ने और उसके साथ संयुक्त होने की फुरसत कम ही लोगों के पास है। कविता से क्रान्ति होना न होना अलग बात है, लेकिन क्रान्तियों में कविताओं का जन्म अवश्य होता है। क्रान्तिधर्मी समाज में कविता अपने पक्ष अवश्य उपस्थित करती है। क्रान्ति जितनी व्यापक और सशक्त होती है उसकी न केवल अभिव्यक्ति की भाषा अपितु प्रतीकों और मुहावरों की निर्मिति भी व्यापक और सशक्त हो जाती है। देश बदल रहा है। समाज बदल रहा है। कविता और क्रान्ति या आन्दोलन का स्वरूप भी निरंतर बदल रहा है। रूढ़िगत परंपराओं के साथ जद्दोजहद भी भी बरकरार रहती है। यह दौर समष्टि का है लेकिन व्यथित व्यष्टि का भी है। व्यक्तिगत पीड़ाओं और संवेदनाओं को अभिव्यक्ति में उतारना कवि के लिए कठिन है। इसी व्यक्तिगत को समष्टिगत स्वरूप प्रदान करना, कवि की कलात्मक जागरूकता का प्रयास है। कविता तो हर जगह है लेकिन उसकी संवेदनात्मक पड़ताल और रचना में प्रस्तुति मुश्किल है। कदम-कदम पर कविता है, संग्रहणीय दृष्टि, संवेदशील हृदय और जनजुड़ाव यदि है तो ! यों भी कह सकते हैं कि वैश्विक दृष्टि होना आवश्यक है।

कविता वैश्विक होती है अपनी विषयवस्तु, अपने अंदाज और अपनी शैली में। किसी भी कवि की कविता रचनात्मक दुनिया में एक खास संवेदनात्मक अस्मिता के साथ उपस्थिति होती है। कभी हरसिंगार के पेड़ के नीचे उसकी हँसी बिखरी दिखायी देती है तो कभी किसी स्त्री के सोने के गहने अमलताश की टहनियों पर टंगे दिखायी दे जाते हैं। कविता ही गर्भस्थ शिशु की कला-कोठरी में समाकर एहसास करवा देती है कि 'वह सृजन का अंधेरा है/जो बड़ा है रोशनी से।' केवल कविता ही समझ सकती है जागती हुई कलमों की भाग-दौड़ और उनकी चिन्ताएँ। 'माँ चलती रहती है हमारे साथ उम्र-भर/अपनी रचना के मोह में बँधी/हमीं में समाकर'–यह एहसास कविता का ही हो सकता है। दृश्य और अदृश्य जगत की तमाम अनुभूतियों को सहेज सकती है तो कविता ही। अज्ञातपुर की कहानियाँ कहती हैं कविता।

कविता सामाजिक मन की बेचैनी को उकेरने का एक प्रयास है। वर्तमान संदर्भ में स्त्री के ओंठ सिले नहीं हैं। वह स्वतंत्र है अपनी बात कहने के लिए। आज भी वह चीखती है और जब वह चीखती है तो वह हारती नहीं, कहती है 'मैं गे हूँ।' शायद यह स्त्री सशक्तिकरण का दौर है इसलिए। सिखाती है अपने बच्चे को प्रेम का पहला अलाप और 'इ सरगम की लौ से जलते हैं/किताबों की दुनिया के आ दीये/और पृथ्वी मुस्कुराती रहती है।' यह पृथ्वी का मुस्कु तमाम तिरस्कार, पीड़ा, समस्याओं और दबावों के बाद बना रहता है। वह स्त्री ही है जो चाँद पर भी बैठा दी जा और नरक में भी धकेल दी जाती है। फिर भी वह पुरु साथ नहीं छोड़ती-घूमती रहती है चकरघिन्नी की लेकिन क्यों एक उँगली के उठ जाने से धराशायी हो ज स्त्री? वर्तमान की प्रोफेशनल लाइफ में गुम होती बे तड़प कविता में व्यक्त होती है, ''अरे किसी को याद

चौराहा

साहित्य और संस्कृति की अर्द्धवार्षिक पत्रिका

अंक-7, जुलाई-दिसम्बर 2016

सलाहकार मंडल

- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
- रेवती रमण

संपादक

- अंजना वर्मा

चलभाष : 09572991995

email : anjanaverma03@gmail.com

संपादन सहयोग

- शेफालिका कुमार

- चित्रांकन : पिंकी

चौराहा के सदस्य बनें

द्विवार्षिक	- ₹ 140/-
पंचवार्षिक	- ₹ 350/-
आजीवन	- ₹ 1000/-
आजीवन (संस्था के लिए)	- ₹ 1500/-

चेक, ड्राफ्ट या मनीऑर्डर संपादक के नाम से संपादकीय पते पर भेजें।

संपादकीय संपर्क :

कृष्णा टोला, ब्रह्मपुरा

मुजफ्फरपुर-842003

इस अंक का मूल्य : 35 रुपये

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक अथवा सलाहकार मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।

पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र मुजफ्फरपुर होगा।

अनुक्रम

- संपादकीय
  - **यह चेहरा किसका है?** / 2
- कहानियाँ
  - **डॉ० शशिभूषण सिंघल** : असंभव / 4
  - **नरेन्द्र किशोर सिन्हा** : मुट्ठी-भर यादें / 10
  - **महावीर रवांल्टा** : अंतराल / 14
  - **अंजना वर्मा** : अनारकली / 18
  - **अरुणा सब्बरवाल** : वह पहला दिन / 24
- कविताएँ
  - **शेफालिका कुमार** : डॉ० जैस्मीन अरोड़ा, भूल, तेजाब / 28
  - **सुशांत सुप्रिय** : ईंट का गीत, कामगार औरतें, मेरा सपना / 29
  - **सत्यनारायण** : सांसारिकता बनाम व्यावसायिकता / 30
  - **अनन्त मोहन दास** : एक एकलव्य यह भी, कानून के हाथ, जो गीत हमने सुने नहीं
  - **देवव्रत अकेला** : सत्य की खोज, हारता रहा हूँ / 32
  - **किशन लाल शर्मा** : औरत / 33
  - **अयाज खान** : औरत एक अधजली पाण्डुलिपि है / 33
  - **केशव शरण** : यथार्थ और स्वप्न, संकल्प और साहस के बजाय, कब तक, तुम अ
- गीत
  - **नचिकेता** : एक मन होता, दुनिया नष्ट नहीं होगी, क्षमा करेंगे / 35
  - **सूर्य प्रकाश मिश्र** : खटक रहा है, रात के पंख / 36
  - **डॉ० रामप्रकाश** : रेत में हम घर बनाते, तुम कहती रहो, आओ अच्छा रूप देख ले
- ग़ज़ल
  - **डॉ० मधुर नज़्मी** : दो ग़ज़लें / 38
  - **धर्मेन्द्र गुप्त साहिल** : चार ग़ज़लें / 39
  - **मंजुला उपाध्याय 'मंजुल'** : दो ग़ज़लें / 39
  - **अनु जसरोटिया** : दो ग़ज़लें / 40
- आलेख
  - **डॉ० छविल कुमार मेहेर** : अज्ञेय : सृजनधर्मिता व प्रयोगशीलता / 41
  - **डॉ० ए० एल० श्रीवास्तव** : प्राचीन नारी केश-वेश / 45
  - **सीताराम गुप्ता** : मित्रता / 48
- पहचान
  - **डॉ० रामसुधार सिंह** : 'सोच विचार' की भव्यता का एक और मानक अंक / 5
  - **सुनील कुमार पाठक** : 'अथ' आलोचनीय उड़ान की अकुलाहट / 52
  - **डॉ० लोकेश कुमार गुप्ता** : अज्ञातपुर की कहानियाँ / 55
- लघुकथा
  - **दिनेश चन्द्र प्रसाद 'दीनेश'** : पति-प्रेम / 29, फायदा / 37
  - **कृष्णचन्द्र महादेविया** : बेटी का दर्द / 17, नानी और धार / 44
  - **ओमप्रकाश बजाज** : चुनौती / 13, अपने / 27
- भाषांतर
  - **अंतोन चेखन** : खलनायकी / 57
- साक्षात्कार
  - **डॉ. पुष्पा सक्सेना से अशोक कुमार ज्योति का साक्षात्कार** / 61
- **आपकी चिट्ठियाँ** / 67
- **साहित्य-संस्कृति समाचार** / 70
- **किताबें मिलीं** / 72